सुबह की तलाश

(छत्तीसगढ़ की छात्र राजनीति में नई रोशनी की खोज)

सुबह की तलाश सुबह की तलाश सुबह की तलाश सुबह की
तलाश सुबह की तलाश सुबह की तलाश सुबह की तलाश सु
बह की तलाश सुबह की तलाश सुबह की तलाश सुबह की
तलाश सुबह की तलाश सुबह की तलाश सुबह की तलाश सु
बह की तलाश सुबह की तलाश सुबह की तलाश सुबह की त
लाश सुबह की तलाश सुबह की तलाश सुबह की तलाश सु
बह की तलाश सुबह की तलाश सुबह की तलाश सुबह की
तलाश सुबह की तलाश सुबह की तलाश सुबह की तलाश
सुबह की तलाश सुबह की तलाश सुबह की तलाश सुबह की
तलाश सुबह की तलाश सुबह की तलाश सुबह की तलाश
सुबह की तलाश सुबह की तलाश सुबह की तलाश सुबह की

छत्तीसगढ़ स्टुडेन्टस्' फेडरेशन

प्रथम प्रकाश : अगस्त, 1990

छात्र समाज में व्यापक चर्चा के लिए
प्रसारित

सहायता राशि । २ रुपये

प्रकाशक : छत्तीसगढ़ स्टुडेन्टस् फेडरेशन
केम्प नं. १, दल्ली राजहरा
जिला दुर्ग
मध्य प्रदेश
पिन– ४९१-२२८

मुद्रक : बजाज स्क्रीन प्रिन्टर्स, दल्लीराजहरा

स्वतंत्रता संघर्ष के युवा शहीद

खुदीराम बोस

भगत सिंह

छत्तीसगढ़ की छात्र राजनीति में एक नई रोशनी चाहिए

दुनिया का इतिहास हमें यह शिक्षा देता है कि देश नायक जब दिशाहीनता से ग्रसित होते है, तब एक अराजकता की स्थिति पनपती है। आज देश मे बेरोजगारी का हाहाकार मचा हुआ है, मंहगाई मध्यवर्गीय परिवारों के गले घोंटने पर उतारू है। इस समय देश की बागडोर एक जागरूक, सृजनशील समूह के संवेदनशील पहल से सम्हाला जाना चाहिए।

छात्र एवं नवयुवक ही आज ऐसा समूह हैं, जिन्हे दृढ़ इच्छा शक्ति के साथ देश के परिवर्तनवादी आन्दोलन को नेतृत्व देना होगा। नवयुवको के नस-नस में खून सात समुन्दर की लहरो जैसे तरंगित है, ये ऐसे कौम है, जो जात पात, भेद-भाव, ऊंचा-नीचा की फरक का तोड़कर समानता लाने की सद्भावना से भरपूर है। इसलिए तो दुनिया के सारे महापुरुषो अपने छात्र जीवन से ही "वसुधैव कुटुम्बकम्" क सिद्धांत से ओत-प्रोत होकर सामाजिक कार्यो में जुटे रहे। छात्र एव नवयुवक १९१७ की ऐतिहासिक अक्टूबर क्रांति को विजय की मंजिल तक पहुचाने के लिए सारी शक्ति लगा दिये थे। चीन, यूरोप एवं लेटिन अमेरिका के देशो म भी अतीत एवं वर्तमान समय में तमाम जनवादी आंदोलन में ये जान फूकते रहे हैं। आज के समय के दुनिया के प्रियतम लोकनेता नेलसन मंडला की पुत्री, एक खिलता हुआ फूल जिजि मंडेला दक्षिण आफ्रिका के नवयुवक नवयुवतियों के दिलो में देश प्रेम की प्रेरणा भरने मे अगुवाई कर रहों है।

भारत की आजादी के इतिहास भी यह साक्ष्य देता है कि १९ वर्ष का बालक शहीद खुदीराम बोस, २२ वर्ष का नवयुवक भगतसिंह और सैकड़ो क्रांतिकारियो ने अपने तप्त खुन गुलामी का जंजीर तोड़ने में अर्पित किये थे। नेताजी सुभाष चन्द्र वोस, जवाहर लाल नेहरु भारत मे "स्टुडेन्टस फेडरेशन" नामक संस्था बनाकर छात्र आंदोलन को अंग्रेज साम्राज्यवाद विरोधी आंदोलन के साथ जोड़कर एक नया जोश पैदा किये थे।

आज यह निश्चित है कि, कांग्रेसी कुशासन ने देश की प्रगति को

रास्ता दिखाने में असफल रहे। दिशाहीनता सारे देश मे छा गई है। देश वासियों के सामने भविष्य अनिश्चित हैं। दिशाहीनता भ्रष्टाचार को जननी हैं, इसलिए न्यायालय से लेकर गांव के मुखिया तक सर्वत्र भ्रष्टाचार का बोलबाला है। सवाल साफ है कि सही दिशा कौन देगा ?

कौन हिम्मत के साथ नाव को बहाव के खिलाफ चलाकर सही लक्ष्य मे पहुचायेगा ? छात्र एवं नवयुवकों को इसका जवाब ढूंढ़ना होगा। पहल करना होगा और कोशिशों के कठिनाईयों को झेलते हुए दीर्घकालीन और अल्पकालीन कार्यक्रमो के जरिये अपनी मंजिल तय करना होगा और यह जनवादी पद्धति से व्यापक किसान-मजदूरो के साथ एकात्म होकर ही संभव हो सकता है।

जापान एक छोटा सा देश है। जापान की प्राकृतिक सम्पदा छत्तीसगढ़ की तुलना में नहीं के बराबर है। फिर भी जापान सिर्फ एशियाई देशो में ही नहीं, बल्कि सारी दुनिया में अपनी अग्रगति का झंडा बुलंद किया। ८० करोड़ का देश भारत आज कोई भी मायने मे जापान की मुकाबला मे खड़ा नहीं हो सकता। भारत में जहा ४० करोड़ नवयुवक अपने अनिश्चित जीवन से डगमगा रहे है, वहा कैमरून जैसे छोटा सा देश फुटबाल मे बाजो मार सकता है। कितना दुर्भाग्य हैं हमारा !

जब दो वियेतनाम एक हो रहा है, दो कोरिया एक हो जाने की तमन्ना लेकर आगे बढ़ रहा है, बर्लिन की दीवार टूटकर दो जर्मनी को एक बना रहा है, उस समय भारत में वर्तमान राजनीति अस्थिरता के माहोल मे मौका पाकर खौफ को राजनीति करने वालो मे हिन्दु और मुसलमान कह कर, हरिजन और सवर्ण कहकर गरीब से गरीब को लड़ाने का साजिश जारी रखा हुआ है। यह आज हमे गभीरता से लेना होगा।

सारे भारत में विदर्भ. छत्तीसगढ़, झारखड, पश्चिम उडीसा एवं पूर्वी उत्तर प्रदेश सबसे पिछड़े हुए इलाके हैं इन इलाकों के राजनैतिक नेता -गण इन इलाकों के जनता को दब्बू बनाकर रखने में जुटे हुए है। इन क्षेत्रो के राजनैतिक नेता, जो कुकर्मों मे लगे हुए है, ये कोई पार्टी विशेष की नहीं हैं। ये सभी पार्टियों के उच्च पद पर आसीन है ये सब 'चोर-

चोर मौसेरे भाई" है।

हम छत्तीसगढ़ के छात्र एवं नवयुवक कम से कम अपनी छत्तीसगढ़ की विनाश के खिलाफ आवाज उठा सकते है। लोहा पत्थर चुना पत्थर, यूरेनियम, कोरण्डम, टीन, क्वार्जाइट, फ्लोराइट, डोलोमाइट, तांबा, कोयला का विशाल भंडार के बावजूद छत्तीसगढ़ के नवयुवक बेरोजगारी की दासता को क्यों मंजूर करेंगे ? महानदी के अपार जल राशि, अरपा, इन्द्रावती, शिवनाथ क्या छत्तीसगढ़ के कृषि योग्य भूमि को सिंचित करने के लिए काफी नहीं है ? फिर भी प्रतिवर्ष छत्तीसगढ़ के गांव के नवयुवक अपनी जनम भूमि छोड़कर कब तक परदेश पलायन करते रहेंगे ? गांव के नवयुवक भाग -कर शहर की ओर या नौकरी के लालच में दलालो की चक्कर में फसकर अपने को लुटाते रहेंगे ? शहर के तथाकथित टेक्नोक्रेट और ब्युरोक्रेट और अनैतिक गैरकानूनी धन्धा करने वाले नवधनाढ्य वर्ग के पुत्रो ने अपनी धन बल और पहुंच का फायदा उठाकर पूरा समाज को कलुषित कर रहे है छात्र जगत भी इनकी हरकतों के कारण अपराधीकरण के माहौल से मुक्त नहीं हो पाया है। हर राजनीतिक पुरुषो के कब्जे में तथाकथित कुछ छात्र नेता रहते हैं, जो प्रशासन की नजर के सामने ही हत्या, बलात्कार जैसे घिनौना कार्यों में लिप्त रहते हैं सफेद कुर्ता ने उन्हे यह अधिकार दिला देता है कि वे बेरोकटोक अपनी अवारा-गर्दी चला सके। इनमे से दो चार हमारे प्रदेश की राजनैतिक बागडोर भी सम्भाल लेते हैं कई तो मंत्री भी बन जाते है।

इन परिस्थितियों में छत्तीसगढ़ के छात्र आंदोलन मे एक बुनियादी परिवर्तन की आवश्यकता हैं। छात्र राजनैतिक बागडोर किसी भी हालत में नव धनाड्य वर्गो के हाथ में नही जाना चाहिए। मूल्यो पर आधारित वैज्ञा- निक सिद्धांत से लैश होकर नैतिकता की मान अनावरत बढ़ाते रहते हुए व्यापक जन समुदाय की आशा आकांक्षाओ को मूर्त रुप देने के लिए छात्र एवं युवा शक्ति को तत्पर रहना होगा।

बहुतो नें अन्याय करना पसंद नहीं करते है। अनैतिक कार्य करने के लिये हिचकिचाते हैं। अपराध की रास्ता से दुर रहते है, यह अच्छा प्रवृत्ति है।

फिर भी बहुतों ने अन्याय सहने का आदि रहते हैं। अन्याय करते वालों के खिलाफ आवाज नहीं उठाते हैं। "कौन झमेला मे पड़ेगा" कहकर अन्यायकारी शक्तियों को बेरोकटोक अनैतिक एवं अपराध मूलक कार्य चलाने का मौका देते हैं। यह अत्यंय खराब बात हैं। अन्याय करना एवं अन्याय को सहना दोनो हो गलत प्रवृत्ति है। छात्र एवं नवयुवक वर्गो को अन्याय सहने की प्रवृत्ति को घृणा करना चाहिए। अन्याय करने वालों के खिलाफ आवाज उठाना चाहिए।

छत्तीसगढ के वर्तमान पीढ़ी के छात्र एवं नवयुवकों से छत्तीसगढ़ की जनता बहुत कुछ उम्मीद करते है। छत्तीसगढ़ के जनता आज व्यवस्था में बुनियादी परिवर्तन की चाह लेकर छटपटा रहा है। एक "सुजलाम् सुफलाम् शस्य श्यामलाम्" छत्तीसगढ़ का सपना हम सबके दिल में है। "सर्वे भवन्तु सुखीना, सर्वे भवन्तु निरामया" कि समतावादी विचारधारा का इतिहास को वैज्ञानिक समाजवादी सिद्धांत से जोड़कर नया छत्तीसगढ़ का निर्माण करना होगा। छात्र एवं नवयुवक वर्ग लहरो कि तरह आगे बढ़ेगे। इन्द्रावती, इभ, अरपा, महानदी, शबोनी, शिवनाथ मिलकर एक अभूतपूर्व कलोच्छ्वास और एक महाकल्लोल सृष्टि करेगा। फिर वनांचल से लेकर शहरांचल तक नवयुवक अर्जुन को तरह गांडीव पकड़कर छत्तीसगढ़ के शोषकों की किला को ध्वस्त कर धरती में मिला देंगे। नई पीढ़ी से यही उम्मीद हैं।

"नौजवान लोग समाज की सबसे अधिक सक्रिय और सबसे अधिक प्राणवान शक्ति होते है। उनमे सीखने की सबसे तीव्र इच्छा होती है, उनके विचारों में रूढ़िवाद का प्रभाव सबसे कम होता है।"

खूब लड़ी मर्दानी ....

जिजि मंडेला

वर्ग-विभाजित समाज में कोई भी राजनीति से परे नहीं

अक्सर पूंजीपति वर्ग के प्रचार माध्यम कहता है कि- राजनीति बड़े-बूढ़े बुद्धिजीवियों को उपज है, साधन सम्पन्न व्यक्तियों का काम हैं। मध्यम और निम्न-मध्यम वर्गीयो युवाओं को राजनीति से तालुकात नही रखना चाहिये। राजनीति को गंदा दलदल बताकर न केवल युवा पीढ़ी को बल्कि आम जनता को भी उससे बचने की सलाह दी जाती है। लेकिन वर्ग-विभाजित समाज में कोई भी राजनीति से परे नही हो सकता है।

वर्ग-विभाजित हमारा यह समाज :

हमारा यह समाज राजनीतिक और आर्थिक आधार पर जमींदार वर्ग, पूंजीपति वर्ग, निम्न-मध्यम वर्ग, अर्धसर्वहारा वर्ग और सर्वहारा वर्ग में बटा हुआ है। जमींदार वर्ग मे बड़े किसान और सामंत शामिल है। पूंजीपति वर्ग में राष्ट्रीय उद्योग पति, बहुराष्ट्रीय कम्पनियों के मालिक, बड़े-बड़े व्यापारी वगैरह आते है। निम्न-मध्यम वर्ग मे छोटे-छोटे किसान, कुटीर उद्य गों के दस्तकार, स्कूलों के आध्यापक, छोटे-छोटे वकील, सरकारी और गैर सरकारी दफ्तरों के कर्मचारी, स्कुल-कालेजों के विद्यार्थी वगैरह को शामिल माना जा सकता है। अर्ध सर्वहारा वर्ग में उन छोटे किसानों हैं, जो आर्थिक कठि-नाईयों के कारण अपनी खेती के अलावा दूसरों के लिये भी मजदूरी करते है। सर्वहारा वर्ग में वे शामिल हैं, जो उत्पादन के कार्य मे तो लगा हुआ है, लेकिन उत्पादन के साधनों, खेतों और कल कारखानों के मालिक नही है। समाज का कोई भी मनुष्य इन वर्गो से परे नही है, वह जरुर किसी ना किसी वर्ग का प्रतिनिधित्व करता है। जहां जमींदार और पूंजीपति वर्ग शोषकों की जमात में शामिल है, वहीं निम्न-मध्यम वर्ग, अर्ध सर्वहारा और सर्वहारा वर्गो के मनुष्य एक विशाल शोषित पीड़ित जन-समूह का निर्माण करते हैं।

कोई राजनीति से अलग नही हो सकता है .

आज ही नही बल्कि पृथ्वी पर राजसत्ता के अभ्युदय के समय से ही राजनीतिक फैसले मनुष्य के भाग्य का फैसला करते आ रहे है। चाहे वह राज-सत्ता द्वारा लिया गया युध्द का फैसला हो, चाहे वह महंगाई

बढ़ाने के लिए हो कर बढ़ाने का निर्णय हो, आम आदमियों पर इन राजनैतिक फैसलों का प्रभाव तो पड़ता ही है, फिर कोई भी पीढ़ी चाहे वह युवा पीढ़ी ही क्यों न हो, स्वय को राजनीति से अलग कैसे रख सकती है ? इस वर्ग विभाजित समाज में राजनीति का रिश्ता भी वर्गों पर आधारित होगा। जमींदार और पूंजीपति वर्ग के युवाओं की राजनीति तथा निम्न-मध्यम वर्ग अर्ध-सर्वहारा वर्ग के युवाओं की राजनीति में जमीन-आसमान का अन्तर होगा। हमारा आशय शोषण—मूलक राजनीति और शोषण के खिलाफ संघर्ष की राजनीति से है।

पूंजीपति वर्ग के प्रचार माध्यम कहता है कि, वर्तमान राजनीति सिर्फ स्वार्थ पर टिकी हैं। इससे युवाओं को अलग रहना चाहिए, क्योंकि इनके आगे कर्तव्यों, दायित्वो और भविष्य निर्माण का सवाल होते है। निःसन्देह वर्तमान राजनीति स्वार्थ पर टिकी है, लेकिन यह स्वार्थ भी वर्गीय स्वार्थ होता हैं। शोषको का स्वार्थ, पीड़ितों का स्वार्थ अलग किस्मों का होता है।

राजनीति को शोषकों से मुक्त करना होगा

राजनीति को साधन-सम्पन्न व्यक्तियों का काम बताकर देश के उन करोड़ों शोषित पीड़ित मनुष्यों का मजाक ही उड़ाया जाता हैं, जो साधन-सम्पन्न वर्ग की राजनीति के कारण ही आज मंहगाई, बेरोजगारी और गरीबी जैसी समस्याओं से घिरे हुए है। देश केवल साधन-सम्पन्न और खाये-पिये लोगों का नहीं हैं, यह राज सत्ता से वंचित करोड़ों मेहनत—कश लोगों का देश है: जहां तक मध्यम, निम्न-मध्यम वर्गीय युवाओं के भविष्य निर्माण का सवाल है, सच बात तो यह है कि, जब तक समाज का भविष्य उज्जवल नहीं होगा, तब तक युवाओं का व्यक्तिगत भविष्य भी हमेशा अनिश्चित और अंधकारमय रहेगा, जैसे कि आज है।

लेकिन अगर हम समाज का भविष्य उज्जवल बनाना चाहते हैं, तो हम निम्न मध्यम, अर्ध-सर्वहारा और सर्वहारा वर्ग के युवाओं को आम-जनता के साथ जुड़कर अमीरों के हाथों से राजसत्ता को छीनने के लिए संघर्ष करना होगा, राजनीति को शोषको के खुनी पजो से मुक्त कराकर उसे आम जनता के हाथों में सौंपना होगा। राजनीति को साधन-सम्पन्न व्यक्तियों का काम सोच कर उससे दूर रहने का मतलब है— अमर शहीद भगत

सिंह, चंद्रशेखर आजाद, खुदीराम बोस जैसे महान क्रांतिकारी युवाओं की शहादत को भूल जाना। ये क्रांतिकारी तो मध्यम या निम्न-मध्यम वर्गों से ही आये थे। स्वाधीनता और समानता के लिए इन्होंने अपने प्राणों की आहुति दी थी। क्या देश के इन महान क्रांतिकारियों के सपने सच हो गये ? क्या मंहगाई, गरीबी और बेरोजगारी के खौफनाक और शर्मनाक दृश्यों को देखकर भी हम स्वयं को एक आजाद मुल्क का निवासी मानने का वहम नहीं पाले हुए हैं।

राजनीति को "गंदा दल-दल" बताना भी दिग्भ्रमित दृष्टि कोण का परिचायक है। राजनीति अगर गंदा दल-दल होती तो स्कूल, कालेजों में राजनीति शास्त्र पढ़ाया ही क्यों जाता ? वास्तव में राजनीति समाज और अर्थ व्यवस्था की नियामक शक्ति है। यह शक्ति जिस वर्ग के हाथों में होगी, वही समाज व्यवस्था और अर्थ व्यवस्था का निर्धारण करेगा, और वह भी अपनी वर्गीय राजनीति के आधार पर। अलग-अलग वर्ग का अपना अलग-अलग राजनीतिक दृष्टि भी होता है।

मध्यम अथवा निम्न-मध्यम वर्ग के लोग राजनीति और क्रांति जैसे विषयों पर दुविधापूर्ण मन:स्थिति में होते है। लेकिन शोषको और शोषितो के बीच वर्ग संघर्ष के तीव्र होने पर इन लोगों की राजनीतिक भूमिका बहुत निर्णायक हो जाती है। इतिहास मे यह सिद्ध कर दिया है कि, इनमे से कुछ लोग क्रांतिकारियों का साथ देते हैं और कुछ क्रांति विरोधी पातो में शामिल हो जाते है। लेकिन ये कभी भी राजनीति से अलग या तटस्थ नहीं रह सकते, क्योंकि परिस्थितियां किसी को भी अलग या तटस्थ रहने की अनुमति नहीं देती।

राजनीति गंदा दल-दल नहीं है

पूंजीपति वर्ग के प्रचार माध्यमो राजनीति को गंदा दलदल बताकर आम जनता को उससे बचने की सलाह देती है, ताकि साधन सम्पन्न लोगों की राजनीति को आम जनता समझ न पाये, और उससे दूर रहे, परहेज करे, जिससे शोषकों की जमात बिना किसी विघ्न बाधा के आम जनता का शोषण जारी रख सके। इस प्रकार राजनीति से बचने की सलाह में भी राजनीति छुपी होती है। जहां तक मध्यम और निम्न-मध्यम वर्गीय युवा-पीढ़ी का सवाल है,

दुनिया की बदली हुई परिस्थितियों मे क्या उनके लिए यह संभव है कि वह स्वयं को राजनीति से अलग कर सके ? जब क्रांति-पूर्व चीन में सरकारी तंत्र मे व्याप्त भ्रष्टाचार के खिलाफ मध्यम, निम्न-मध्यम और सर्वहारा वर्गो के युवाओं ने अपने क्रांतिकारी राजनीतिक आन्दोलन के जरिये दुनिया को झकजोर दिया, तब क्या भारत के छात्रों और युवाओं को पाठ्य पुस्तकों तथा डाक-सामग्रियों की मूल्य वृध्दि के बावजूद राजनीति से अलग रहना चाहिए ? क्या राजनीति से अलग रहकर महंगाई और बेरोजगारी को चुपचाप सहते चले जाना, या दिनों दिन महंगी होता जा रही शिक्षा पद्धति को चुपचाप झेलते चले जाना ही युवाओं के 'कर्तव्य और 'भविष्य निर्माण, के सवालों का एक मात्र समाधान है ?

चाहिए एक सही विचारधारा-

राजनीति से दूर रहने से कोई समस्या का हल नही हो सकता। युवा पीढ़ी को आज चाहिए एक सही और क्रांतिकारी राजनीतिक विचार धारा, शोषण विहीन और वर्ग विहीन समाज निर्माण के लिए क्रांतिकारी वर्ग संघर्ष की विचार धारा।

(नव-भारत १५-७-९० में प्रकाशित महासागर की एक लेख पर आधारित)

छत्तीसगढ़ के विकास में छात्र-वर्ग की भूमिका

भारत में प्रचलित शिक्षा-नीति हमेंशा से चर्चित रही है। विभिन्न छात्र-संगठनों, राजनेताओं, शिक्षाविदों एवं बुद्धिजीवियों ने इस शिक्षा-नीति एवं व्यवस्था पर व्यापक टीका-टिप्पनी की हैं। प्रत्यक्ष रुप से राष्ट्रीय शिक्षा नीति बनी, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान-परिषद, प्रान्तीय शिक्षा अनुसधान परिषद, डी.आई इ.टो. दून स्कूल की शली के नवोदय विद्यालय भी बनाये जाते रहे, पर शिक्षा के मूलभूत ढांचे में कोई परिवर्तन नहीं हुआ। स्वतन्त्रता प्राप्ति के ४३ वर्षों बाद हम यह सोचनें को मजबूर हैं कि कदाचित हमारी शिक्षा-नीति की कमजोरी ही भारत में अनिश्चितता के इस वातावरण को बनाने की जिम्मेदार है।

मुट्ठी भर गोरे शोषकों की मानसिकता से ओत-प्रोत, उनकी प्रशासनिक क्षमता को बढ़ाने के उद्देश्य से प्रेरित, शासक एवं शासितों के मध्य सेतु का कार्य करने के लिये, १८१३ सन में लाड मेकाले ने बाबुओं (क्लर्क) का एक वर्ग बनाने के उद्देश्य से आज की शिक्षा-नीति को बनाया था। पुराने जंग खाये मशीन पर रंग-रोगन लगाने की तरह हमारी शिक्षा-नीति ने भी कई जामे बदले पर, इसका हुलिया न बदला। अगर ऐसा न होता तो............

१) वर्तमान शोषण-ग्रस्त समाज अब तक अपरिवर्तित न रहता,

२) हर शिक्षित व्यक्ति वर्तमान व्यवस्था की काल-सापेक्ष प्रासंगिकता छोड़ कर इस व्यवस्था की प्रशंसा का तोता रटत न रटता।

३) शिक्षितों का सुविधाभोगी वर्ग वृहत्तर समाज से स्वयं को काटकर अल्प संख्यक वर्ग की तरह व्यवहार न करता,

४) उत्पादक कार्यो से कटकर स्वयं शिक्षित वर्ग आम जनता से बिलग न होता,

५) व्यवस्था—संचालन की सुविधार्थ बनाया गया दब्बू वर्ग उपनिवेश की समाप्ति के ४३ वर्ष बाद भी औपनिवेशिक मानसिकता से ग्रस्त न होता,

६) देश की जन—कल्याण मूलक भूमिका के विज्ञापन पर किये जाने वाले व्यय से भी कम शिक्षा हेतु न दी जाती।

वर्तमान शिक्षा-नीति एवं पद्धति देश की आवश्यकता एवं जन-की आकाँक्षा की पूर्ति कर पाने में अक्षम है। इसका जीवंत उदाहरण देखिये: १५० वर्षों से विश्व-विद्यालयों की संख्या में १५० गुनी वृद्धि भले ही हुई हो, पर इतने वर्षों तक जीव-विज्ञान में सहस्त्रों वैज्ञानिक (?) बनाकर भी हमारे देश एक छोटे से जीव मच्छर को अपनी गिरफ्त में न ले सका। मलेरिया, एनकेफेलाइटिस आदि प्राणघातक रोगों के मूल में यही मच्छर हैं। कई जटिल बीमारियों के लक्षण कारण एवं उपचार जानने वाले चिकित्सा विद्यार्थी को आमतौर पर होने वाली उल्टी-टट्टी पर जीवन रक्षा करने वाले नमक-शक्कर के घोल की जानकारी नहीं दी जाती। तकनीकी-शिक्षा के क्षेत्र में सर्वाधिक प्रतिस्पर्धा सिविल-इंजीनियरिंग में दाखिले के लिए होती है, ताकि पी. डब्लू. डी. या सिंचाई विभाग में बह रही विकास की गंगा में डुबकी लगाने का मौका मिले। सच और झूठ, आवश्यक और अनावश्यक, न्याय और अन्याय में फर्क कर सकने की क्षमता को ही इस शिक्षा व्यवस्था ने कुंठित कर दिया है। यही कारण है कि एक बलात्कारी, डकैत या कार्य--कर्ता तीनों के प्रति कानून व्यवस्था सम भाव रखती है,-- कार्यकर्ता को वकील भले न मिले, पर बलात्कारी, डकैतों, अपराधियों को अच्छे वकीलों की सेवाएं सदैव उपलब्ध होती है।

ग्रामीण एवं शहरी नागरिक-सुविधाओं के बीच बढ़ती खाई हमारी शिक्षा-व्यवस्था पर भी लागू होती है। एक ओर शहरी 'इंडिया' के स्कूलों में प्राप्त आधुनिक सुविधाओं से सज्जित प्रयोगशालाएं एवं उच्च सम्मान प्राप्त शिक्षक तथा महाविद्यालयों में विदेशों से आये अतिथि प्राध्यापकों की भीड़ हैं (जैसे कि दिल्ली के जवाहरलाल नेहरु विश्व-विद्यालय में) हर एक छात्र पर हजारों रुपये प्रतिमाह व्यय होता है। वहीं ग्रामीण "भारत" में गरीब बच्चों की ५ कक्षाओं के लिए २ कमरे हैं तथा कई बार एक मात्र शिक्षक उपलब्ध है। ऐसी हालत में शहरी छात्रों के मुकाबले ग्रामीण अंचलों के छात्रों का किसी भी प्रतियोगिता में टिकना लगभग असंभव होता है। इस दौड़ में मध्यम वर्गीय परिवारों के छात्र भी मेघावी होने के बावजूद आर्थिक सीमाओं के कारण प्रतिष्ठित (सफल) नहीं हो पाते। फलत: इस शिक्षा पद्धिति से निराश की जमात ही पैदा होती है। अति अल्प मात्रा मे लोग अपने मनोनुकूल काम पर जा पाते है। शारीरिक श्रम एवं उपयोगिता की ओर से विमुख इस

शिक्षा-पद्धति के द्वारा निर्मित शिक्षित बेकार (सुखियार) होकर एक सामाजिक बोझ बन जाते हैं। समाज के लिए अनुपयोगी, स्वयं को बेकार मानने वालों की यह फौज चंद असामाजिक तत्वों तथा स्वार्थी राजनेताओं के चंगुल में पड़कर अराजकता के वातावरण को उग्रता प्रदान करती है।

छत्तीसगढ़ के संदर्भ में भी उपरोक्त तथ्य समान रुप से लागू होते है, बल्कि छत्तीसगढ़ की हालत तो अन्य क्षेत्रो से बद्तर है। क्योंकि यहां शहर और गांव के बीच फर्क की खाई और भी अधिक गहरी है। गांवों में शोषण कर रहे लोग भी स्वयं शहरी शोषण का शिकार है, क्योंकि शहरों की शिक्षा, व्यापार और राजनीति पर स्वार्थी तत्व ही हावी है।

आज जबकि अन्य प्रान्तो में छात्र-राजनीति में विकास की मुख्य धारा से जुड़ने की जी तोड़ कोशिश जारी है, वहां छत्तीसगढ़ में आज भी सचेत छात्र-संगठन न होने के कारण छात्रों की राजनीति का अपना स्वतंत्र अस्तित्व नहीं है। इस कठपुतली छात्र-नेताओं के नियंत्रण की बागडोर कहीं और से नियंत्रित होती है। यही कारण है कि इस पर नियंत्रण की प्रतिस्पर्धा में जो ताम-झाम और खर्च होता है वह विधानसभा के चुनाव से किसी तरह कम नही हैं।

हमें भी दुनिया के नवयुवकों, छात्रों को कदम से कदम मिलाकर चलना होगा। हमें भी भारत के अगुवा छात्र-वर्ग के कंधे से कंधा मिलाकर चलना होगा। इतिहास के पन्नों से हमें यह शिक्षा मिलती है कि विद्यार्थी स्वय पुस्तकों एवं पुस्तकालयों से शिक्षित होता है, एव किसानों, मजदूरों तक अपनी शिक्षा द्वारा अर्जित ज्ञान का प्रकाश पहुचाता है। जब देश की जनता राजनैतिक दिशाहीनता का शिकार हो, उस समय छात्र समाज जैसे क्रान्तिकारी वर्ग ही समाज को गुणात्मक परिवर्तन की ओर प्रेरित करने के लिए कूद पड़ते हैं। हमारे देश की आजादी की लड़ाई में भी छात्र समाज ने अपनी जिम्मेदारी निभाकर मिशाल कायम की। १९१७ की रुसी क्रांति, चीन में सामन्त-साम्राज्यवाद विरोधी संघर्ष में भी छात्र-समाज की भूमिका स्वर्ण अक्षरों में अंकित है। १९६८ का फ्रांसीसी छात्र-आन्दोलन ने तो एक विद्रोह का रुप ले लिया था, जिसमें लाखो मजदूरों-किसानों ने सक्रिय हिस्सा लिया।

आज भारत के विभिन्न प्रांतों में विशेषत: महाराष्ट्र, केरल, बंगाल, आंध्र, उत्तर खण्ड, पंजाब, झारखण्ड आदि क्षेत्रों के छात्र-आंदोलनों से समाजिक परिवर्तन हेतु अपना जिम्मेदारी निभाने को संकल्पित है। असम में छात्र-आन्दोलन ने राज्य–सरकार भी बनवाया तथा छात्र मुख्यमंत्री भी दिया। आज भी वहाँ का "आसू" मुद्दों की राजनीति से हटा नहीं है। छत्तीसगढ़ के छात्र–आन्दोलन में भी दिशा–प्रेरक के रुप में ७०वें दशक का अंग्रेजी विरोधी आन्दोलन अथवा जगदलपुर में एक महिला के बलात्कार के विरोध में हुए आंदोलन है। चांपा में पेयजल की मांग को लेकर किये गये आन्दोलन का नेतृत्व भी छात्रों ने दिया जिसमें एक छात्र शहीद हो गये। व्यापक क्षेत्र में अलग-अलग होने वाले इन प्रयासों के बावजूद सम्यक दृष्टिकोण के अभाव छत्तीसगढ़ का यह आन्दोलन दिशा को स्पष्ट दे पाने की स्थिति मे न आ सका। कभी विन्द्रा काण्ड जैसी घटनायें या छात्र-आंदोलनो के नेता डा. काम्बले जैसे लोगों की हरकतों- इन हादसों से हमारे छत्तीसगढ़ में प्रगतिशील छात्र-आंदोलन का स्वप्न को एक ठेस लगती हैं और कुछ बिखर सा जाता है।

सबसे खतरनाक होता है हमारे सपनों का मर जाना। (अवतार सिंह पाश)

हमारे छत्तीसगढ़ के समस्त विद्यालयों, महाविद्यालयों एवं विश्व- के छात्र-छात्राओं, वर्तमान परिस्थिति में छत्तीसगढ़ के विकास के प्रश्न पर चिन्ता करना निहायत जरुरी है। हम कुठाओं को हटाने एवं समाज को प्रतिष्ठित करने वाले एक ऐसे छात्र-आंदोलन का सूत्रपात करें, जिससे छत्तीसगढ़ की मौजूदा समस्यायें ही छत्तीसगढ़ के विकास का आधार बन सके, बेरोजगारी, भुखमरी, पलायन, अशिक्षा, कुस्वास्थय से ग्रस्त हमारे देश-वासियों के मुक्ति का राह प्रशस्त कर सकें।

हमारे देश-प्रेम की पहचान. . . . .
हमारा छत्तीसगढ़.
छोटा और सुन्दर राज्य छत्तीसगढ़.
नये भारत के लिए नया छत्तीसगढ़.
शोषण विहीन छत्तीसगढ़.
हमारे सपनों का छत्तीसगढ़.
आइये हम सब मिलकर अपना सपना साकार करें।

उम्र १८ साल की

तरुणाई की चरम अवस्था से,
यौवन में पदार्पण
यानी, उम्र १८ साल की ।।

मसें भरती, फड़कती बांहें,
तना सीना, गर्वोन्नित ललाट,
रोड़ा हटाता, जो मारकर लात,
ऐसी दुधर्ष, साहसी, उम्र होती है १८ साल की..........

नहीं पसंद इस उम्र को रोना,
जानता नहीं किसी के सामने गिड़गिड़ाना,
विवशता ?
विवशता क्या चीज होती है ¿
विवश की क्या खीझ होती है ?
यह भी इसने न जाना,
१८ की उम्र ने न जाना,
संभव हो संभव लगता है सब कुछ इस उम्र में,
ऐसी होती है उम्र १८ साल की............

प्रचण्ड वेगवती धार पर बह रही नाव,
पवन गति से चल रही, जिसका नहीं कोई ठहराव,
नाविक सम्हलता, दुष्वार है धार,
सम्हलकर अगर न चलाये पतवार,
डूब जाते है अकारण प्राण कई हजार,
ऐसी होती है यह उम्र १८ साल की............

चाहत से भरा दिल, आंखों में सपना,
जान दे देने और ले लेने तक का साहस

कुछ कर गुजरने की तमन्ना,
हृदय सुरभित पुष्प सम तनु नव विचारों से,
तरुणाई की चरम अवस्था से,
यौवन में पदार्पण,
यानी, उम्र १८ साल की ....

सरफरोशी के लिए रहकर तत्पर,
मात दे तुफान को हर चाल पर,
प्राणघाती, क्रूर, कठोर प्रहार भी सहकर,
चलना चाहता सदा उन्मुक्त, बंधन तोड़कर
दूर...... ......जड़ता को हटाता खूब दूर...........
भय की छाया भी बने कैसे अभय की रोशनी में,
भले करना पड़े मरण का वरण १८ की उम्र में,
ऐसी होती है यह उम्र १८ साल की ....

ओह ! उम्र १८ साल की ! ! ये क्या कुछ नहीं करना चाहती,
हर एक का दर्द अपने दिल में लेकर,
हर नई रोशनी को ललायित सतत् पूर्वाभिमुख रहकर,
फाड़कर रख दे कलेजा, जिनसे प्रश्रय पाये विनाश,
ताकि, अपनी चाहत के मुताबिक, कर सके सृष्टि का विकास,
तभी से संतुष्ट एक उच्छवास ....

तरुणाई पार कर यौवन की दहलीज पर खड़े युवकों,
मत भूलो, अभी तुम हो १८ साल के,
१८ साल की उम्र,
जो नहीं जानती डरना,
नहीं जानती रुकना,
चलती है लगातार संघर्ष के पथ पर ....

सलामत रहे यह तुम्हारी तरुणाई का यौवन/यौवन की अरुणिमा,
कि सारा देश, भूलकर अपनी कालगत उम्र

हो जाये नव उर्जापूरित युवा,
महसूस करे अपनी वहीं उम्र १८ साल की,
सलामत रहे यह उम्र १८ साल मेरे देश की,
इस उम्र को सलाम ! अरुण यौवन को सलाम ।

(सुकांत भट्टाचार्य की एक
कविता अनुवाद प्रयास)

एक दिन का सपना

एक दिन
जब
सब को पीने का पानी मिलेगा
जब
सब को पेटभर खाना मिलेगा
जब
सब को रहने का घर होगा
जब
बच्चों की आँखोमें चमक होगी
जब
शोषक, पूंजीपति भागेंगे
वह दिन कब आयेगा ?
जब मजदूर का राज होगा

छत्तीसगढ़ स्टुडेन्टर्स् फेडरेशन
के
कार्यक्रम

१ पूरे छत्तीसगढ़ के छात्र-छात्राओं को संगठित कर नया छत्तीसगढ़ के निर्माण के लिए आन्दोलन करना ।

२. हम वर्तमान गलत शिक्षा नीति के खिलाफ संघर्ष करेंगे । हम सघर्ष करेंगे---

क- गांव व शहर के शिक्षा सुविधाओं में समानता लाने के लिये,

ख- तकनीकी ज्ञान देने वाली एवं स्वनिर्भर इन्सान बनाने वाली शिक्षा प्रणाली की स्थापना के लिए,

ग- जनोपयोगी शिक्षा व्यवस्था लागू करने के लिये,

घ- शिक्षा के क्षेत्र में भ्रष्टाचार को रोकने के लिये,

ड- अपसंस्कृति और अंधविश्वास के खिलाफ, दुसुम-दुसुम कराटे कुंफु संस्कृति के खिलाफ, सेक्स सस्कृति के खिलाफ नई जनवादी सस्कृति के निर्माण के लिये ।

३. जिन क्रांतिकारियों न नय भारत के निर्माण के सपनों को लेकर हमें बलिदान को भावना से प्रेरित किया, उनके जोवन व कर्म से शिक्षा लेते हुए हम उनके अधूरे सपनों को सफलता का मंजिल तक पहुचाने की प्रेरणामूलक शिक्षा पद्धति का कार्यक्रम प्रस्तुत करेंग ।

हम होंगे कामयाब, हम होंगे कामयाब एक दिन
मन में है विश्वास, पूरा है विश्वास
हम होंगे कामयाब, एक दिन ।

"यह दुनियां तुम्हारी है यह हमारी भी है लेकिन अन्ततोगत्वा यह तुम्हारी ही होगी। तुम नौजवान लोग ओजस्विता और जीवन-शक्ति से भरपूर सुबह या नौ बजे के सूरज की तरह अपनी जिन्दगी की पूर्वहार मंजिल में हो। हमारी आशाएं तुम पर लगी हुई है। यह दुनिया तुम्हारे ही हाथों में है"

"कोई नौजवान क्रान्तिकारी हैं अथवा नहीं यह जानने का कसौटी क्या हैं? उसे कैसे पहचाना जाय? इसका कसौटी केवल एक है, यानि यह देखना चाहिए कि वह व्यापक मजदूर-किसान जनता के साथ एक रुप हो जाना चाहता है अथवा नहीं, तथा इस बात पर अमल करना हैं अथवा नही? क्रांतिकारी यह है जो मजदूरों व किसानों के साथ एक रुप हो जाना चाहता हो, और अपने अमल में मजदूरों व किसानों के साथ एक रुप हो जाता हो"